भूमिका

भक्ति क्या है? यदि हमने भक्ति को समझ लिया, तो हमें यह समझ में आ जाएगा कि जीवन का क्या उद्देश्य है? इस शीर्षक में तीन शब्द हैं-"भक्ति, सनातन और आधार।" हम इन्हें क्रमशः समझने का प्रयास करेंगे। पहला प्रश्न जो उठता है, वह है- भक्ति क्या है? भक्ति का अर्थ भक्ति शब्द में ही निहित है। "भक्ति" शब्द की उत्पत्ति "भज" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है सेवा करना या भजना, अर्थात भक्ति का मतलब सेवा करना है। भक्ति का अर्थ कई बार लोग अपनी समझ के अनुसार अलग-अलग व्याख्यायित करते हैं, परंतु सारांश में भक्ति का मूल अर्थ सेवा करना होता है।

उसी प्रकार यदि देखें तो धर्म क्या है? धर्म का अर्थ क्या है? धर्म का मतलब है जो धारण किया जाए। हम लोग अपनी अल्पज्ञता के कारण कई बार हिंदू धर्म, मुस्लिम धर्म, सिख धर्म आदि कहते हैं। वास्तव में, यह धर्म नहीं हैं; यह समूह हैं, यह विचारधाराएं हैं, यह पंथ हैं। तो धर्म क्या है? शास्त्रीय मतानुसार धर्म का मतलब है धारण करना, जिससे उसे अलग न किया जा सके। जैसे नमक का धर्म है नमकीनपन और नमकीनपन को नमक से अलग नहीं किया जा सकता। चीनी का धर्म है मिठास; चीनी ने मिठास को धारण कर रखा है और मिठास के हटते ही चीनी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार, यह भक्ति हम सबने धारण कर रखी है, यानी दूसरे शब्दों में कहा जाए तो "भक्ति ही धर्म है और धर्म ही भक्ति है।"

अब आप सोचेंगे, किसने इसे धारण कर रखा है? हम अगर देखें, तो लोग हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई नहीं हैं, क्योंकि हिंदू मुस्लिम बन जाता है, मुस्लिम पुनः घर वापसी करके हिंदू बन जाता है, कुछ ईसाई बन जाते हैं फिर वापस आ जाते हैं। यह धर्म नहीं है। धर्म का मतलब वह है, जिसे हटाने के बाद मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाए। तो ऐसा क्या है जिसे हटाने से मेरा अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा? इधर हम मुस्लिम से हिंदू वापस बने, तो भी अस्तित्व खत्म नहीं हुआ। संसार में आप देखते होंगे कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ सेवा निरंतर कर रहा है, बिना सेवा किए हम रह नहीं सकते। यह सेवा भाव ही वास्तव में भक्ति है और यही धर्म है।

अब आपके मन में यह प्रश्न उठेगा कि यह सेवा किसने धारण की हुई है? इसका उत्तर है, हम सब जीवों ने।अब यदि "सनातन" को परिभाषित करने का प्रयास करें तो "सनातन " शब्द का अर्थ होता है शाश्वत, सदा से। सदा से क्या है? शाश्वत और सदा

एक ही बात है।सत्य का मतलब जो हमेशा से है ,जो हमेशा रहेगा । "सनातन " का मतलब है शाश्वत, जो सदा से है, सदा रहेगा ,जिसका प्रारंभ और अंत दोनों ही ज्ञात न हो।

ऐसा क्या है जो सदा से है, सदा रहेगा? वह निश्चित रूप से आत्मा और परमात्मा है।आत्म-चिंतन करने पर हम पाएंगे कि हम शरीर नहीं हैं, हम आत्मा हैं। हम अज्ञानता के कारण अपनी पहचान अपने शरीर, अपनी जाति, अपने व्यवसाय से करते हैं, लेकिन वास्तविकता में हम आत्मा हैं और आत्मा परमात्मा का अंश है। **"ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:"** अर्थात आत्मा परमात्मा का अंश है, यानी कि हम जीवात्माएं परमात्मा के अंश मात्र हैं। जैसे हाथ इस शरीर का अंश है और हाथ का कर्तव्य है शरीर की सेवा करना। हाथ निरंतर शरीर की सेवा करता है, बिना ईर्ष्या-द्वेष के।इसी प्रकार, हमें भी श्री कृष्ण की सेवा करनी चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के अंश रूपी आत्मा हैं। लेकिन जब आत्मा भौतिक प्रकृति के संपर्क में आती है, तो उसमें कई दोष उत्पन्न हो जाते हैं और उनमें से एक प्रमुख दोष है ईर्ष्या।

ईर्ष्या के कारण जीवात्मा परमात्मा की सेवा नहीं करता है, क्योंकि वह स्वयं ईर्ष्या आदि दुर्गुणों के कारण परमात्मा बनना चाहता है।ईर्ष्या और द्वेष में हम दूसरों के दोष देखते हैं और दोष क्यों देखते हैं? क्योंकि हम खुद को श्रेष्ठ साबित करना चाहते हैं। जब भी हम किसी में दोष देखते हैं, तो इसका कारण यही होता है कि हम यह दिखाना चाहते हैं कि हम उस व्यक्ति से बेहतर हैं। जब भी हमें किसी से द्वेष होता है, तो हम उसमें दोष ढूंढना शुरू कर देते हैं। अनंत जन्मों से जो ईर्ष्या की बीमारी हम सभी को लगी हुई है, उसी के कारण हम श्री कृष्ण की सेवा नहीं कर पा रहे हैं और स्वयं परमात्मा बनने का प्रयास कर रहे हैं। यदि अहंकार, ईर्ष्या इत्यादि दुर्गुण हमारे अंदर से समाप्त न हुए, तो यह क्रम अनंत जन्मों से चला आ रहा है और अगर हमने इस पर ईमानदारी से कार्य नहीं किया तो आगे भी अनंत जन्मों तक जारी रहेगा।

हम सबको विचार करना होगा कि वास्तव में हम कौन हैं और हमारा मूल क्या है? मूल का मतलब है आधार। "आधार" शब्द के कई अर्थ होते हैं और इन अर्थों में गहरे रहस्य छिपे होते हैं। आधार के कई मतलब होते हैं जैसे सहारा, आश्रय, भोजन, खुराक, भरोसा, बुनियाद आदि। वास्तव में भक्ति ही सनातन का आधार है। यदि हम इसे समझ जाएं, तो सारी मानवता एक हो जाएगी। वर्तमान समय में भिन्न-भिन्न विचारों, मतों और कथित धर्मों में मानवता विभाजित हो गई है। अपनी सोच, परिस्थिति और भावनाओं के आधार पर लोगों ने अपने-अपने भगवान बना लिए हैं। किसी ने अल्लाह, तो किसी ने गॉड, इत्यादि नाम दिए। वहीं, हिंदू धर्म के मानने वालों ने भी शिव, विष्णु , गणेश, दुर्गा, काली, भैरव इत्यादि असंख्य देवी-देवताओं को

भगवान के रूप में स्थापित किया। अपनी-अपनी सोच, मान्यता और पूजा पद्धति के आधार पर मानवता बिखर गई है।यदि हम एक बार फिर सत्य की खोज की यात्रा निरंतर जारी रखें, तो हम धर्म और भक्ति की ओर लौट सकते हैं। जो हमारे मतभेद हैं, उनसे हम बाहर निकल सकते हैं। भक्ति ही सनातन का आधार है। यही सारे शास्त्रों, वेदों, पुराणों और उपनिषदों का निचोड़ है। भक्ति ही सर्वोपरि है और सनातन धर्म ही वास्तविक धर्म है, यानी सनातन धर्म ही वास्तविकता है और प्रत्येक जीवात्मा सनातन धर्मी है।

लगभग पाँच-छह सौ वर्ष पहले गुरु ग्रंथ साहिब और सिख धर्म का उदय हुआ। चौदह सौ साल पहले कुरान का आगमन हुआ और उसके मानने वाले मुस्लिम मतावलंबी आए। दो हजार साल पहले बाइबल आई, जिसे हमारे ईसाई बंधुओं ने माना। इससे पहले बौद्ध और जैन धर्म का भी उदय हुआ। लेकिन वास्तविकता में ये सब कहाँ से आ रहे हैं? जब बाइबल नहीं थी, कुरान नहीं थी, गुरु ग्रंथ साहिब नहीं था, तो क्या भगवान नहीं थे? या धर्मग्रंथ नहीं थे? पौराणिक रूप से, यदि आप मनन-चिंतन करेंगे, तो पाएंगे कि सभी मतों का आधार उपनिषद, वेद और भगवद गीता थी। भगवद गीता का उपदेश भगवान ने अर्जुन के माध्यम से हम सभी जीवों के लिए द्वापर युग के अंत में दिया था। आज से लगभग पांच हज़ार वर्ष पूर्व, गीता के चौथे अध्याय में भगवान अर्जुन से कहते हैं कि यह ज्ञान मैंने तुमसे पहले सूर्य देव विवस्वान को दिया था, यानी अनंत वर्षों पहले गीता की उत्पत्ति हो चुकी थी।अतः सनातनी पुरातन भगवद गीता का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। यह वेदों से है, महाभारत से है और सदा से है। ज्ञान का अर्थ है जो सदा से है, जो सदा रहेगा, अर्थात शाश्वत और अक्षुण्ण। जैसा कि सर्वविदित है, ज्ञान का जन्म नहीं होता और न ही वह नष्ट होता है। गीता का जो ज्ञान है, वह अनादि और अनंत है।

यदि हम इस बात को समझ लें, तो निश्चित रूप से मानवता को एक छत्रछाया में लाया जा सकता है। अर्थात धर्म का एकमात्र आधारभूत और सर्वव्यापी रूप हमें भगवद गीता के रूप में प्राप्त हुआ है। मानवता को एक सूत्र में बांधने का सरल तरीका हमें गीता के शाश्वत आधार में मिलता है। मानवता की सेवा, भक्ति भाव और आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का सरल सूत्र इस जीवन और पारलौकिक जीवन की सभी समस्याओं का समाधान गीता के ज्ञान से प्राप्त होता है।आध्यात्मिक सूत्र को समझने के लिए हमें एक सरल तरीके का अनुसरण करना होगा, क्योंकि आज के व्यस्त जीवन में लोगों के पास समय का अभाव है। आज हम मनुष्य अपने भरण-पोषण में ही लगे रहते हैं,जैसे दिनभर पशु समाज में। दिन-प्रतिदिन रोटी, कपड़ा और मकान की जंग छिड़ी रहती है। मनुष्य आहार, निद्रा, भय, मैथुन के भोग में पशु-पक्षियों के

समान व्यस्त रहता है। सत्य को समझने और आत्म-साक्षात्कार करने के लिए, आज मनुष्य समय के अभाव को कारण बताते हैं। वे संपूर्ण समय पशु जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में लगाते हैं, जबकि मनुष्य जीवन की वास्तविक आवश्यकता गीता का ज्ञान है।

यदि हम इसे समझ लें, तो इसी समय चक्र में हम ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं और सनातनी शिक्षा को सरल तरीके से समझ सकते हैं। इसमें हमारे परम गुरुदेव, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद जी की विशेष कृपा द्वारा हमें पूरा मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। गुरुदेव जी की कृपा से पूरे विश्व को ज्ञानमार्ग की तरफ भक्ति को साधन मानते हुए मनुष्यता के कल्याण से जोड़ा जा सकता है। उन्होंने बड़ी सरलता से अपनी ओजपूर्ण, मधुर, ज्ञानमयी वाणी के माध्यम से चैतन्य महाप्रभु की कृपा को हम सब तक पहुंचाया है। उन्होंने भक्ति के सिद्धांतों को सरल रूप में प्रस्तुत किया और गीता की टीका की। उनकी शिक्षाओं पर आधारित इस पुस्तक "भक्ति- सनातन का आधार" को लिखने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में हम प्रयास करेंगे कि बहुत ही सरलता से व्यक्ति इसे समझ सके और प्रभुपाद जी के संदेशों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। प्रभुपाद जी के संदेशों को और सरल करके, विभिन्न उदाहरणों और तर्कों के साथ सिद्धांतों को समझने का प्रयास करेंगे।

जैसा कि सर्वविदित है, मानव जीवन सत्य को जानने के लिए मिला है। यदि हम सत्य को नहीं जान पाए, तो मनुष्य जीवन पशुओं की तरह निकल जाएगा। पहला सत्य यह जानना आवश्यक है कि हम नश्वर शरीर नहीं, हम नित्य आत्मा हैं। दूसरा सत्य यह जानना है कि हम परमात्मा के अंश हैं और हमारा अस्तित्व परमात्मा में निहित है। तीसरा, परमात्मा से सानिध्य प्राप्त करने का साधन क्या है? साधन है भक्ति, यानी सेवा। आत्मा जब परमात्मा की सेवा करती है, तब वह संतुष्ट और आनंदित होती है। सेवा भाव प्रत्येक मनुष्य के ह्रदय में विराजमान है, इसे गुरु की कृपा, ज्ञान और भक्ति से सही दिशा दी जा सकती है।

बस एकमात्र शर्त यह है कि लौकिक विचार, ईर्ष्या और द्वेष समाप्त कर दिए जाएं, क्योंकि इनके साथ किसी भी मनुष्य के अंदर सेवा भाव उत्पन्न नहीं हो सकता। हम सेवा उस व्यक्ति की ही कर पाते हैं जिससे हम ईर्ष्या नहीं करते। मन में प्रश्न स्वतः ही जागृत होता है कि हम किससे ईर्ष्या नहीं करते? उत्तर है, हम मनुष्य अपने शरीर से ईर्ष्या नहीं करते, अपने बच्चों से ईर्ष्या नहीं करते और यदि हमारी पत्नी भी हमारे अधीन हो, तो उससे भी ईर्ष्या नहीं करते।

हाँ, अगर पत्नी आपसे श्रेष्ठ पद पर पहुंच जाए या आपसे अधिक सफल हो जाए, तो आप उससे भी ईर्ष्या करने लगते हैं। ईर्ष्या तो हमेशा श्रेष्ठ से होती है, अपने से निम्न से नहीं। इसलिए अज्ञानतावश हमें भगवान और गुरु से ईर्ष्या होती है और हम उनकी सेवा नहीं कर पाते हैं और उनके सानिध्य में भी नहीं रह पाते। जिससे हमें ईर्ष्या नहीं है, उसके साथ रहने में हमें कोई दिक्कत नहीं होती। आश्रित स्नेह और समर्पण भाव लिए, हम आत्मिक जन्म के आश्रित जन की सेवा कर पाते हैं। जब हम सेवा करते हैं, तो हमें क्षणिक सुख मिलता है।लेकिन यह सुख क्षणिक क्यों है और नित्य क्यों नहीं? इसका कारण यह है कि जो नित्य संबंध है, वह आत्मा और परमात्मा का है। उस सेवा को न कर, हम क्षणिक संबंधों की सेवा कर रहे हैं, और उस सेवा से हमें क्षणिक सुख मिलता है। यदि हम नित्य संबंध की सेवा करने लगेंगे, तो हमें नित्य, अनंत, अविनाशी सुख प्राप्त हो जाएगा।

हम सभी को इस प्रयास में लगना चाहिए कि सबसे पहले हम अपनी बीमारियों को पहचानें कि हमारी असली बीमारी क्या है? यदि आपको यह महसूस होता है कि आप बीमार हैं, तो आपको इसका उपचार करना चाहिए। जो समाधान या औषधि दी जाती है, उसका इस्तेमाल करें, उन समाधानों को स्वीकारें, तो आपकी बीमारी ठीक हो जाएगी और आप वास्तविक आनंद को प्राप्त कर सकेंगे। तब आप अपने मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भी प्राप्त कर पाएंगे। लेकिन अगर आप यह मानने के लिए तैयार ही नहीं हैं कि आप बीमार हैं, तो फिर कोई आपका इलाज कैसे करेगा?हमें सभी को कुछ समय निकालकर यह विचार जरूर करना चाहिए कि जीवन क्या है, जो दिनचर्या हम जी रहे हैं, क्या वही शाश्वत है? हम कहाँ से आए हैं और हम कहाँ जाएंगे? नश्वर संसार को हम कभी भी छोड़ देंगे और जब संसार छोड़कर जाएंगे, तो कहाँ जाएंगे? क्या उस लोक में हमारा स्थान सुनिश्चित होगा?

हम मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि के आधार पर इन असीमित प्रश्नों का उत्तर क्या प्राप्त कर सकते हैं? यदि नहीं, तो इन प्रश्नों का उत्तर देने में कौन सक्षम है? जब हमने अपने जीवन में ज्ञान और भक्ति को कभी आधार माना ही नहीं, तो क्या हम अपनी छद्म विद्वत्ता के आधार पर इन आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं?हम सबको यह समझना होगा कि हमारी वास्तविक स्थिति क्या है? और अगर हम इस वास्तविक विज्ञान को स्वीकार कर पाएं, तो निश्चित रूप से हमारे जीवन में पूर्णता आ जाएगी और हमारे मानव जीवन का जो लक्ष्य है, वह हमें प्राप्त हो जाएगा।

कई बार लोग प्रश्न करते हैं कि भगवान ने तो मनुष्य बनाए थे, इंसान ने जातियाँ बना

दीं। लेकिन कई लोग बिना सही जानकारी के ऐसा बोलते हैं। जबकि यदि कोई गीता का साधक है, गीता पढ़ने वाला है, तो वह जानता है कि भगवान स्वयं कह रहे हैं:

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः"

अर्थात "मैंने चातुर्वर्ण्य की रचना की है।" जो लोग अज्ञानी हैं, लेकिन खुद को विद्वान मानते हैं, वे कहते हैं कि ये जाति व्यवस्था तो केवल भारत में ही है, अमेरिका, चीन या अन्य देशों में नहीं। लेकिन सच्चाई यह है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र – ये सब जगह हैं। धरती का या ब्रह्मांड का कोई कोना ऐसा नहीं है, जहाँ यह वर्ण व्यवस्था न हो।जो शिक्षा देने वाले हैं, जो ज्ञान देने वाले हैं, अब कौन सा ऐसा देश है, जहाँ लोग ज्ञान नहीं देते? अगर कोई जगह ऐसी है, जहाँ आध्यात्मिक ज्ञान को महत्व नहीं दिया जाता, तो वहाँ भौतिक ज्ञान ही सही। लेकिन ज्ञान देने वाले लोग हर जगह मिलेंगे। उन्हें आप ब्राह्मण कह सकते हैं। तो क्या अमेरिका में लोग सत्य नहीं बोलते? चीन में सत्य नहीं बोलते हैं? या वहाँ लोग ज्ञान नहीं देते? शिक्षा नहीं देते?

जो सुरक्षा करते हैं, वे क्षत्रिय हैं। सैन्य व्यवस्था तो सब जगह है। चीन में भी सैनिक हैं, अमेरिका में भी सैनिक हैं। वे सभी क्षत्रिय हैं। जो लोग व्यापार करते हैं, वे वैश्य हैं। कोई ऐसा देश नहीं है, जहाँ व्यापार न हो रहा हो। अतः जो भी व्यापार कर रहा है, वह वैश्य है, और जो नौकरी कर रहा है, वह शूद्र है।तो हम सबको यह ज्ञान नहीं है कि वास्तविकता क्या है। आध्यत्मिक चिंतन, मनन, ध्यान और लेखन के माध्यम से हम वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और वास्तविक आनंद के साथ जीवन जी सकते हैं।

मनुष्य जीवन बड़ा दुर्लभ है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद यह मानव तन मिलता है। **'बड़े भाग मानुष तन पावा'** यानी मनुष्य शरीर मिलना अत्यंत दुर्लभ है। बुद्धि और विवेक का बहुमूल्य गुण संसार की विभिन्न योनियों में सिर्फ मनुष्य को ही प्राप्त हुआ है।संसार के अधिकतर लोग यह मानते ही नहीं हैं कि उन्हें यह अत्यंत दुर्लभ अवसर मिला है। उन्हें लगता है कि अगर उनके पास अच्छी नौकरी नहीं है, तो वे भाग्यशाली नहीं हैं। अगर उनके पास पैसा नहीं है, तो वे भाग्यशाली नहीं हैं। अगर उनका अभ्यास अच्छा नहीं है, तो वे भाग्यशाली नहीं हैं। वे विभिन्न प्रकार के सांसारिक सुखों के अभाव में, रिश्तों के अभाव में खुद को भाग्यशाली नहीं मानते।

लेकिन सच्चाई यह है कि वे मानव तन को समझ ही नहीं रहे हैं कि इस तन से क्या प्राप्त किया जा सकता है।**"दुर्लभं मानुषं जन्म"** जिन जीवों को मनुष्य तन मिला है,

उनमें भी कौन भाग्यशाली है? तो आचार्य गण बताते हैं: **"ब्रह्मांड भ्रमते कोनो भाग्यवान जीव गुरु- कृष्ण- प्रसादे पाय भक्ति लता बीज"**। इस ब्रह्मांड में भ्रमण करने वाली अनंत जीवात्माओं में कोई विरला भाग्यवान जीव ही गुरु-कृष्ण प्रसाद द्वारा भक्ति का बीज प्राप्त करता है। यह भक्ति सर्वश्रेष्ठ है और सनातन का आधार है, लेकिन यह सबको प्राप्त नहीं होती। भौतिक सुखों के प्रतीक जैसे पैसा, पद, स्त्री, पुरुष, बच्चे, घर, सम्पत्ति – ये सब कुछ मिल जाएगा, लेकिन मनुष्य के वास्तविक भाव को जागृत करने वाली भक्ति प्राप्त करना आसान नहीं है। यह हर किसी को प्राप्त नहीं होती। भक्ति मनुष्य के अंदर भाव से प्रकट होती है।

भक्ति का अर्थ सेवा है-'साधन से साध्य की सेवा'। जब आत्मा परमात्मा की सेवा करती है, तो वह वास्तव में भक्ति है। अपने परिवार और परिचितजनों की सेवा से हम संसार में आसक्त हो जाते हैं। जब हम संसार की सेवा करते हैं, तो हम सांसारिकता में बंध जाते हैं। सांसारिकता मृत्यु, बिछोह और रिश्तो में धोखा हमें दुख देता है। कई बार यह दुख और संसार का दर्द इतना गहरा होता है कि वह असाध्य रोगों का कारण बन जाता है।इसके विपरीत, यदि यही भक्ति, यही सेवा हम गुरु की करें, कृष्ण की करें, तो निश्चित रूप से हम आनंद में रहते हैं और हमारे सांसारिक बंधन, सांसारिक आसक्ति कट जाती है। हमें शाश्वत ज्ञान प्राप्त होता है और इसके अनेकों उदाहरण भी मिलते हैं।

ईर्ष्यालु व्यक्ति शरणागत नहीं हो सकता क्योंकि उसमें अहम प्रबल होता है। जिसने अपनी ईर्ष्या को समाप्त कर दिया है, वही शरणागत हो सकता है और वास्तव में वही आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का सुपात्र है। शरणागत व्यक्ति ही भगवत धाम जाता है और जीवन में आनंद प्राप्त करता है।हमें इन विषयों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और अपने मानव जीवन को सही दिशा में अग्रसर करना चाहिए। सत्य को सरलता से समझकर हमें अपने जीवन को सत्य और प्रेम के पथ पर आगे बढ़ाना चाहिए।

इस संसार में हमें कुछ नहीं चाहिए, केवल प्रेम ही चाहिए, क्योंकि प्रेम ही आनंद है। जीवन का कोई और लक्ष्य नहीं है। प्रत्येक जीव, चाहे वह पशु हो, पक्षी हो, कीट हो या मानव, सब प्रेम चाहते हैं, सब आनंद चाहते हैं। लेकिन उन्हें प्रेम का पथ नहीं पता है। प्रेम पथ पर चलने के लिए हमें यह समझना होगा कि हम जीवन में क्या गलती कर रहे हैं। कहीं हम नश्वर चीजों से प्रेम तो नहीं कर बैठे हैं? यदि हम अपनी गलतियों को ईमानदारी से स्वीकार कर लें और उन्हें सुधारने का प्रयास करें, तो सफलता निश्चित रूप से हमारी होगी।आज आवश्यकता है सही दिशा और सही ज्ञान की।

भक्तिपूर्वक प्राप्त सही दिशा और ज्ञान से जो निस्वार्थ सेवा का भाव उत्पन्न होगा, वह निश्चित रूप से इस भवसागर को पार करने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

मैं आप सभी से निवेदन करता हूँ कि इस "भक्ति सनातन का आधार" पुस्तक का लाभ उठाएँ और इसे पढ़ें। मेरी इच्छा थी कि इस पुस्तक का विमोचन हमारे परम प्रिय गुरुदेव, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज जी की व्यास पूजा पर उनके करकमलों से हो, लेकिन भगवान (श्री कृष्ण) ने गुरु महाराज को अन्य सेवा में लगा दिया। इसलिए वे हमारे बीच प्रत्यक्ष रूप से नहीं हैं, लेकिन गुरु महाराज की व्यास पूजा पर महाराज व वरिष्ठ वैष्णवों द्वारा इस पुस्तक का विमोचन हुआ।

इसे पढ़ने वाले व्यक्ति को गीता को समझने का आधार प्राप्त होगा, क्योंकि गीता में भक्ति ही भक्ति है और कुछ नहीं। श्रील प्रभुपाद जी कहते हैं कि गीता में केवल भक्ति ही भक्ति है, धर्म ही धर्म है। "भक्ति ही धर्म है और धर्म ही भक्ति है।"

भक्ति के आधार पर जब व्यक्ति इस पुस्तक को पढ़ेगा और समझेगा, तो वह गीता को भी बड़ी आसानी से समझ पाएगा और उसका पूरा लाभ ले सकेगा। गीता यथारूप के साधकों को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए और इसका लाभ उठाना चाहिए।

श्रील प्रभुपाद की जय, गुरु महाराज की जय!

अपरिमेय श्याम दास
26 अगस्त, 2024 (श्री कृष्ण जन्माष्टमी)
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

आभार सन्देश

इस पुस्तक "भक्ति- सनातन का आधार" को आपके हाथों में पहुँचाने में अनेक महानुभावों का योगदान रहा है, जिनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

सबसे पहले, मैं अपने परम गुरु श्री श्री कृष्णकृपामूर्ति ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद जी व अपने प्रिय गुरुदेव परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज जी को हृदय से आभार देना चाहता हूँ, जिनके ग्रंथों व प्रवचन के मार्गदर्शन और शिक्षाओं ने मुझे आध्यात्मिकता के गहरे सागर में गोता लगाने की प्रेरणा दी। उनके उपदेशों ने मुझे जीवन के सच्चे अर्थ को समझने और कृष्ण भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने में मार्ग दर्शन किया।

परम पूज्य जयपताका स्वामी महाराज जी, परम पूज्य गुरु प्रसाद स्वामी महाराज जी, परम पूज्य नव योगेन्द्र स्वामी महाराज जी, परम पूज्य राधानाथ स्वामी महाराज जी, परम पूज्य लोकनाथ स्वामी महाराज जी, श्रीमान महामन प्रभु जी, श्रीमान कृतु प्रभु जी ,श्रीमान भीमा प्रभु जी, श्रीमान वासुघोष प्रभु जी, श्रीमान देवकीनन्दन प्रभु जी, परम पूज्य प्रबोधानंद सरस्वती महाराज जी, परम पूज्य भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी महाराज जी, परम पूज्य भक्ति पुरुषोत्तम स्वामी महाराज जी, परम पूज्य भक्ति अनुग्रह जनार्दन स्वामी महाराज, परम पूज्य भक्ति रक्षक गोकुलानंद स्वामी महाराज, परम पूज्य भक्ति प्रचार परिव्राजक महाराज जी, परम पूज्य भक्ति करुणामय वनमाली महाराज जी, श्रीमान जितामित्र प्रभु जी, श्रीमान ब्रज हरी प्रभु जी, श्रीमान सूरदास प्रभु जी, श्रीमान गौरांग प्रभु जी, श्रीमान सहदेव प्रभु जी, श्रीमान मोहन रूपा प्रभु जी, श्रीमान ब्रजेन्द्र नंदन प्रभु जी, श्रीमान ऋषि कुमार प्रभु जी, श्रीमान रुक्मिणीकृष्ण प्रभु जी, श्रीमान केशव मुरारी प्रभु जी, श्रीमान आनंद प्रभु जी, श्रीमान प्रेमहरिनाम प्रभु जी,श्रीमान सुन्दर गोपाल प्रभु जी, श्रीमान अमोघलीला प्रभु जी व श्रीमान सचिनंदन प्रभु जी के साथ ही सभी प्रभुपाद जी के शिष्यों, जी.बी.सी सदस्यों, ब्यूरो सदस्यों एवं संस्था के सभी वैष्णवों जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन से यह सेवा संपन्न हो सकी, आप सबको मैं अपने सारगर्भित श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ और सभी के प्रति कृतज्ञता व हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। इन सभी महान विभूतियों ने मुझे अपनी अमूल्य शिक्षाओं और आशीर्वाद से अभिसिंचित किया है।

उनके अनुग्रह और मार्गदर्शन के बिना इस बद्धजीव के द्वारा पुस्तक लेखन की यह सेवा संभव ही नहीं थी। मैं अपने माता-पिता, मेरी धर्म पत्नी अचिंत्य रुपणी देवी दासी, मनुज प्रभु, राज स्मृति माता जी,देव रक्षक दास, हेमा जगवानी माताजी, श्वेता पांडे माताजी, आकांक्षा पांडे माताजी, अंजू मिश्रा माताजी, अंशिका यादव माताजी ,अभिषेक गुप्ता प्रभु जी, पुष्पेन्द्र कुमार शुक्ला प्रभु जी व अन्य सभी भक्तों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मेरे लेखन के दौरान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर मुझे समर्थन प्रोत्साहन और सहयोग दिया। उनके बिना यह प्रयास अधूरा रहता।

अंततः, मैं उन सभी पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को पढ़ने और इसमें निहित ज्ञान को आत्मसात करने का समय निकाला। आपकी भक्ति में प्रगति और समर्थन ही मेरे लेखन का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

परम भगवान श्री कृष्ण एवं जगतगुरु श्रील प्रभुपाद जी की कृपा हम सब पर बनी रहे| मैं अकिंचन दास आप सभी वैष्णवो के आशीर्वाद का सदैव आकांक्षी रहूंगा|

कृष्ण भावना भावित धन्यवाद सहित,
आप सभी वैष्णवों का सेवक
अपरिमेय श्याम दास

माननीयों के सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि श्री अपरिमेय श्याम दास जी द्वारा भक्ति के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित "भक्ति-सनातन का आधार" नामक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

मैं, श्री अपरिमेय श्याम दास जी को उनकी रचित पुस्तक के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

राजनाथ सिंह
रक्षामंत्री, भारत सरकार

****

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इस्कॉन मंदिर, लखनऊ के अध्यक्ष श्री अपरिमेय श्याम दास जी द्वारा लिखित "भक्ति-सनातन का आधार" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

ईश्वर भक्ति द्वारा मानव अपने आध्यात्मिक जीवन को सही दिशा देकर मानव जीवन की परिपूर्णता प्राप्त कर सकता है। मैं आशा करती हूँ कि प्रकाश्य पुस्तक जनमानस को भक्ति व सनातन का सही अर्थ समझाने में सफल होगी।

मैं श्री अपरिमेय श्याम दास जी को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि श्री अपरिमेय श्याम दास की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधारित पुस्तक 'भक्ति-सनातन का आधार' का प्रकाशन किया जा रहा है।

सनातन धर्म में मानव कल्याण की भावना समाहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भारत की पुरातन आध्यात्मिक विरासत का मूल भाव है. जिसने पूरी दुनिया को एक परिवार के रूप में मानकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने की प्रेरणा दी है। सनातन परम्परा व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में संतुलन और शान्ति की ओर ले जाती है।

भक्ति का मार्ग ईश्वर की आराधना का सरल, सहज और सर्वसुलभ मार्ग है। ईश्वर के प्रति उत्कृष्ट प्रेम और उसके नाम का स्मरण भक्ति मार्ग का आधार है। अपने आराध्य के प्रति गहरी अनुरक्ति और उसको पाने की लालसा भक्त की पहचान होती है।

भक्ति मार्ग और आध्यात्मिक उन्नति का पारस्परिक जुड़ाव है। इस दृष्टि से यह पुस्तक पाठकों के आध्यात्मिक उन्नयन में उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक 'भक्ति-सनातन का आधार' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश

प्रिय अपरिमेय श्यामदास जी,

आपकी पुस्तक "भक्ति-सनातन का आधार" के प्रकाशन पर आपको हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। इस महत्वपूर्ण कृति के माध्यम से आपने कृष्ण भक्ति और आध्यात्मिकता के महत्व को अत्यंत सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

वैदिक ग्रंथों का अध्ययन और आध्यात्मिकता को समझने में गुरु की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। गुरू ही वेदों के गूढ़ रहस्यों को हमारे लिए सुलभ बनाते हैं और हमें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। आपकी पुस्तक इस बात को बड़े ही सुंदरता से उजागर करती है। कृष्ण भक्ति और गुरु के मार्गदर्शन में आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शिका है। इससे पाठकों को अपने जीवन में भक्ति और अध्यात्म के महत्व को समझने और अपनाने का अवसर मिलेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि "भक्ति-सनातन का आधार" पुस्तक पाठकों के हृदय में एक विशेष स्थान बनायेगी और उन्हें आध्यात्मिक यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। भगवान श्रीकृष्ण की कृपा आप पर बनी रहे और आप इसी प्रकार अपने ज्ञान और अनुभव से समाज को लाभान्वित करते रहें। शुभ-कामनाओं सहित।

शुभकामनाओं सहित,

केशव प्रसाद मौर्य

उपमुख्यमंत्री (उत्तर प्रदेश)

आपके द्वारा लिखित "भक्ति- सनातन का आधार" पुस्तक एक दर्पण की भांति है जो आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व व लेखन को प्रतिबिम्बित करती है। यह पुस्तक बताती है कि आध्यात्मिकता हमारे जीवन का वह आधार है जो हमें आंतरिक शांति, संतोष और स्थिरता प्रदान करती है। भगवान श्री कृष्ण की भक्ति हमें न केवल आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरित करती है, बल्कि हमारे बहुमूल्य जीवन को भी सार्थक बनाती है।

इस पुस्तक की सार्थकता व सफलता "मनसा वाचा कर्मणा" के द्वारा इसके लिए किए गए अथक प्रयासों पर पूर्णतया निर्भर करेगी। यह पुस्तक अपनी विषय को बड़ी ही गंभीरता और संवेदनशीलता से पाठक पर स्पष्ट छाप छोड़ने में सफल होगी।

मेरी शुभकामना है कि इस पुस्तक के अध्ययन से समाज में एक नई चेतना व ज्ञान का संचार हो।

शुभकामनाओं सहित,

ब्रजेश पाठक

उपमुख्यमंत्री (उत्तर प्रदेश)

संपादक

प्रिय पाठकगण,

हमारे समक्ष प्रस्तुत है एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण कृति "भक्ति- सनातन का आधार", जिसे लेखक अपरिमेय श्यामदास जी ने बड़े ही मनोयोग और श्रद्धा के साथ लिखा है। इस पुस्तक का प्रकाशन हमारे लिए गर्व का विषय है, क्योंकि यह सनातन धर्म और कृष्ण भक्ति के गहरे रहस्यों और महत्व को सरलता से समझाती है।

सनातन धर्म हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हमें धर्म, कर्तव्य और नैतिकता के सही मायनों से परिचित कराता है। आध्यात्मिकता हमारे जीवन में शांति, संतोष और स्थिरता लाने का माध्यम है। यह पुस्तक बताती है कि आध्यात्मिक चेतना क्या है, और इसे अपने जीवन में अपनाना क्यों आवश्यक है? आत्मा की खोज और कृष्ण भक्ति के माध्यम से हम अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं।

आध्यात्मिक चेतना का अर्थ है- अपने भीतर के सत्य को पहचानना और उसे जीना। आत्मा की खोज में जब हम कृष्ण भक्ति को अपनाते हैं, तो हमें वास्तविक सुख और शांति प्राप्त होती है। यह पुस्तक आपको इस यात्रा पर चलने के लिए प्रेरित करेगी और आपको दिखाएगी कि कैसे कृष्ण भक्ति के माध्यम से आप अपनी आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

कृष्ण भक्ति न केवल हमें भगवान श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण सिखाती है, बल्कि हमें अपने जीवन के हर पहलू में संतुलन और स्थिरता प्रदान करती है। यह पुस्तक आपको बताएगी कि कैसे कृष्ण भक्ति के माध्यम से हम अपने मन को शुद्ध कर सकते हैं और अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

इस पुस्तक को पढ़कर आप न केवल सनातन धर्म और कृष्ण भक्ति के महत्व को समझेंगे, बल्कि एक नए दृष्टिकोण से अपने जीवन को देखना शुरू करेंगे। यह पुस्तक निस्संदेह आपकी आध्यात्मिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बनेगी और आपको आत्मा की खोज और आध्यात्मिक चेतना के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगी।

हम आशा करते हैं कि "भक्ति- सनातन का आधार" आपके जीवन में एक नई रोशनी लाएगी और आपको अपने आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर करेगी।

शुभकामनाओं सहित,
टीम फोकटेल्स

आशीर्वचन

हरे कृष्णा, अपरिमेय श्याम दास आप ये जो पुस्तक लिख रहे हैं 'भक्ति-सनातन का आधार' ये बहुत अच्छी बात है, आप बहुत अच्छे से सरल ढंग से समझाने का प्रयास कर रहे हैं और सभी लोगों का कर्त्तव्य है कि सभी भगवान कि भक्ति करें। प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है सेवा करना, हम सब को श्री कृष्ण कि सेवा करनी है। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आपका ये लेखन जन जन तक पहुचे यही मेरी कामना है।

परम पूज्य नव योगेन्द्र स्वामी महाराज जी

****

'भक्ति-सनातन का आधार' पुस्तक गोपाल कृष्ण स्वामी महाराज जी के लिए एक अद्‌भुत भेंट है और साथ ही इस्कॉन के भक्तों के लिए एक उपयोगी साधन भी है।

मेराआशीर्वाद और शुभकामनाएं आपके साथ हैं और मैं आपकी महान सफलता की कामना करता हूँ।

परम पूज्य लोकनाथ स्वामी महाराज जी

****

'भक्ति-सनातन का आधार' एक अद्‌भुत, अच्छी तरह से शोध किया गया ग्रंथ है जो सभी स्तरों के भक्तों की मदद करेगा और उन्हें प्रेरित करेगा। विशेष रूप से, इसका अध्ययन भगवद गीता के अध्ययन और समझ के लिए एक अनिवार्य आधार है।

"मैं सनातन धर्म को मुख्य विषय के रूप में रखने वाली इस शानदार, सबसे प्रासंगिक पुस्तक के लिए लेखक, अपरिमेय श्याम दास का वास्तव में आभारी हूँ।"

श्रीमद्‌ महामन प्रभु जी

****

श्रील प्रभुपाद ने भक्तों को लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, चाहे आपकी रचना प्रकाशित हो या न हो, इसकी चिंता न करें। श्रील प्रभुपाद ने हमें अपनी अनुभूतियों को लिखने के लिए कहा और बताया कि यह हमारी कृष्ण भावनामृत में प्रगति के लिए सहायक होगा।

श्रीमद्‌ भीमा प्रभु जी

"अपरिमेय श्याम प्रभु जिस प्रकार जनमानस को भक्ति की शिक्षा देने का अथक प्रयास कर रहे हैं, यह पुस्तक 'भक्ति- सनातन का आधार' उन सभी भक्तों के लिए अत्यंत उपयोगी होगी, विशेष रूप से उनके लिए जो घर पर रहकर भक्ति का अभ्यास कर रहे हैं। सभी साधक भक्तों को इसे पढ़कर लाभ लेना चाहिए।"

परम पूज्य भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी महाराज

****

"भक्ति-सनातन का आधार" पुस्तक प्रभुपाद जी की शिक्षाओं पर आधारित एक क्रांतिकारी पुस्तक साबित होगी। इस पुस्तक को अपरिमेय श्याम प्रभु ने बड़े मनोयोग से बहुत ही सरल शब्दों मे भक्ति के गहरे सिद्धांतों को समझाने का प्रयास किया है। भक्ति का प्रारम्भ करने वालो भक्तों के लिये यह पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी।

परम पूज्य भक्ति पुरुषोत्तम महाराज जी

****

"श्रील प्रभुपाद चाहते थे कि उनके अनुयायी उनकी पुस्तकों का अध्ययन करें और अपनी अनुभूतियों के आधार पर, परंपरा के अनुरूप, पुस्तकें लिखें, जिसमें सार और प्रथाएं बरकरार रहें। यह बहुत अच्छा है कि आप लिखने के लिए प्रेरित हैं और हिंदी में लिख रहे हैं। जब आपकी पुस्तक उपलब्ध होगी, तो मुझे इसे पढ़ने में खुशी होगी। आपको शुभकामनाएं और धन्यवाद।"

परम पूज्य शुकदेव स्वामी महाराज जी

****

अपरिमेय श्याम प्रभु ने 'भक्ति- सनातन का आधार' नामक जो पुस्तक लिखी है, यह श्रील प्रभुपाद जी की शिक्षाओं पर आधारित है। श्रील प्रभुपाद जी चाहते थे कि उनकी इस संस्था में जो भक्त पुस्तक लिखने के योग्य हैं, उन्हें अवश्य ऐसी पुस्तकें लिखना चाहिए, जिनके द्वारा वैष्णव सिद्धांत का पुष्टिकरण होता है। पुस्तक का शीर्षक भी अपने आपमें पूर्ण है, जिससे सूचित होता है कि सनातन जीव को जिस सनातन आधार की आवश्यकता है, वह केवल भक्ति ही है और कुछ नही।

श्रीमद् जितामित्र प्रभु जी

प्रिय अपरिमेय श्याम प्रभु जी,
"भक्ति के दृष्टिकोण से सनातन धर्म के सिद्धांतों को प्रस्तुत करने में अपने कई दशकों के अनुभव को साझा करने के लिए मैं आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे यकीन है कि आपके अद्‌भुत योगदान से दुनिया को बहुत लाभ होगा।"

श्रीमद् गौरांग दास

****

'भक्ति— सनातन जीव का आधार' नामक यह पुस्तक आध्यात्मिक जीवन की खोज में संलग्न व्यक्तियों के लिए एक मार्गदर्शिका है। इसमें भक्त, भगवान तथा भक्ति विषयक समस्त विषयों को श्रीमान अपरिमेय श्याम प्रभुजी ने इस्कॉन के संस्थापकाचार्य श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं को आधार बनाकर अत्यधिक सरल सुगम्य रूप में प्रस्तुत किया है ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति इसे समझ सके।

इस पुस्तक में प्रस्तुत शिक्षाएँ कालातीत हैं, जो व्यक्तिगत तथा आध्यात्मिक विकास के लिए अमूल्य योगदान प्रदान करती हैं। पुस्तक का प्रत्येक अध्याय गहन शिक्षाओं से परिपूर्ण है। जिसके अध्ययन द्वारा पाठक अपनी चेतना को उन्नत करने में समर्थ होगा।अतः विभिन्न आध्यात्मिक अवधारणाओं को सुलभ तथा व्यावहारिक माध्यम द्वारा व्यक्त करने की क्षमता इस पुस्तक को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

जो व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग में प्रवेश करने के इच्छुक हैं उन्हें इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। यह पुस्तक प्रकाश की एक किरण है जिसे मैं सभी आध्यात्मिक साधकों द्वारा अध्ययन करने हेतु प्रेरित करता हूं।
अंततः मैं अपरिमेय श्याम प्रभु जी को यह पुस्तक प्रस्तुत करने के लिए बधाई देता हूँ तथा उनकी सराहना करता हूँ।

श्रीमद् सर्वसाक्षी दास

****

"हरे कृष्णा मैं अपरिमेय श्याम प्रभु जी को सादर वंदन और अभिवादन करना चाहूंगा क्योंकि उन्होंने इतनी सुंदर पुस्तक लिखी है। भक्ति तत्वों को समझाते हुए आज कई अन्य ऐसी पुस्तक है, जो की मोटिवेशनल स्पीकिंग अर्थात प्रेरणात्मक वचनों को तो रखती है लेकिन जो मूलभूत भक्ति का सिद्धांत है उसको बताने में हिचकिचाते हैं, लेकिन यहां अपरिमेय श्याम प्रभु ने भक्ति के दिव्य तत्वों को सरल भाषा में सामान्य जन को के लिए इतने सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है कि जितनी इसकी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। मैं सभी पाठकों से विनती करूंगा कि इस पुस्तक को बहुत गहराई से और मन लगाकर पड़े निश्चित रूप से ऐसा करके उनके हृदय में भक्ति देवी प्रकट होगी।"

श्रीमद् अमोघलीला प्रभु